02-09-09 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

''मीठे बच्चे – योगबल से बुरे संस्कारों को परिवर्तन कर स्वयं में अच्छे संस्कार डालो। ज्ञान और पवित्रता के संस्कार अच्छे संस्कार हैं''

प्रश्नः- तुम बच्चों का बर्थ राइट कौन-सा है? तुम्हें अभी कौन-सी फीलिंग आती है?

उत्तरः- तुम्हारा बर्थ राइट है मुक्ति और जीवनमुक्ति। तुम्हें अब फीलिंग आती है कि हमें बाप के साथ वापिस घर जाना है। तुम जानते हो–बाप आये हैं भक्ति का फल मुक्ति और जीवन मुक्ति देने। अभी सबको शान्तिधाम जाना है। सबको अपने घर का दीदार करना है।

तो मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे–तुम यह समझते हो आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल..... कितने काल के बाद मिले हैं? फिर कब मिलेंगे? सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरू मिला दलाल के रूप में। गुरू तो बहुत हैं ना। इसलिए सतगुरू कहा जाता है। स्त्री को जब हथियाला बांधते हैं तो भी कहते हैं यह पति तुम्हारा गुरू ईश्वर है। पति तो पहले-पहले नापाक बनाते हैं। आजकल तो दुनिया में बहुत गन्द लगा पड़ा है। अब तुम बच्चों को तो गुल-गुल बनना है। तुम बच्चों को पक्का-पक्का हथियाला बाप बांधते हैं।

यूँ तो शिव जयन्ती के साथ ही रक्षाबंधन हो जाता है। गीता जयन्ती भी हो जानी चाहिए। कृष्ण की जयन्ती थोड़ा देरी से नई दुनिया में हुई है। बाकी त्योहार सब इस समय के हैं। राम नवमी कब हुई–यह भी कोई को पता है क्या? तुम कहेंगे नई दुनिया में 1250 वर्ष के बाद में राम नवमी होती है। शिव जयन्ती, कृष्ण जयन्ती, राम जयन्ती कब हुई.....? यह कोई भी बता नहीं सकते। तुम बच्चे भी अभी बाप द्वारा जान गये हो। एक्यूरेट बता सकते हो। गोया सारे दुनिया की जीवन कहानी तुम बता सकते हो। लाखों वर्ष की बात थोड़ेही बता सकते। बाप कितनी अच्छी बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। एक ही बार तुम 21 जन्मों के लिए नंगन होने से बचते हो। अभी तुम 5 विकारों रूपी रावण के पराये राज्य में हो। अभी सारे 84 का चक्र तुम्हारी स्मृति में आया है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बेहद सुख का वर्सा प्राप्त करने के लिए मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र जरूर बनना है। अच्छे संस्कार योगबल से धारण करने हैं। अपने को गुणवान बनाना है।

2) सदा खुशी में रहने के लिए बाप जो रोज़ गुह्य-गुह्य बातें सुनाते हैं, उन्हें सुनना और दूसरों को सुनाना है। किसी भी बात में मूँझना नहीं है। युक्ति से उत्तर देना है। लज्जा नहीं करनी है।

वरदानः- हर सेकण्ड के हर संकल्प का महत्व जानकर जमा का खाता भरपूर करने वाली समर्थ आत्मा भव

संगमयुग पर अविनाशी बाप द्वारा हर समय अविनाशी प्राप्तियां होती हैं। सारे कल्प में ऐसा भाग्य प्राप्त करने का यह एक ही समय है - इसलिए आपका स्लोगन है ''अब नहीं तो कभी नहीं''। जो भी श्रेष्ठ कार्य करना है वह अभी करना है। इस स्मृति से कभी भी समय, संकल्प वा कर्म व्यर्थ नहीं गंवायेंगे, समर्थ संकल्पों से जमा का खाता भरपूर हो जायेगा और आत्मा समर्थ बन जायेगी।

स्लोगनः- हर बोल, हर कर्म की अलौकिकता ही पवित्रता है, साधारणता को अलौकिकता में परिवर्तन कर दो।